International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 289-291

ममता शर्मा कृत ''मन की कंदराओं में'' में व्यक्त प्रेम निरूपण

अंजली रानी

MM College, Faatehabad, Haryana, India

प्रस्तावना

प्रेम काव्य का प्रमुख वर्ण्य विषय हैं। रसराज श्रृंगार की अभिव्यक्ति प्रेम की आधार भूमि पर ही होती है। प्रेम के स्वरूप की इयत्ता नहीं है। प्रेम की व्यापक परिधि में जड़ जगत् की सामान्य से सामान्य वस्तु से लेकर प्रकृति, देश, विश्व, मानव और ईश्वर सभी का समाहार होता है। भक्ति सूत्र प्रणेता नारद ने'अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरूपम्' कह कर उसे वर्णनातीत ही ठहरा दिया है। महाप्रभु चैतन्य ने 'प्रेमापुमानी महान्' द्वारा प्रेम का उदात और अवदात रूप प्रस्तुत किया है। सौंदर्य के संबंध में तो साहित्य शास्त्रीय दृष्टि और अधिक सूक्ष्म है। आत्मपरक और वस्तुपरक दृष्टि से सौंदर्य का विवेचन जहाँ उसकी आधार भूमियों का पार्थक्य द्योतित करता है तो वहाँ सौंदर्यबोध–जन्य आनंद के स्वरूप का महत्त्व भी प्रकट करता है। काव्य का जगत सौंदर्य का जगत् है, कला में आनंद विधायक तत्त्व सौंदर्य ही है अतः सौंदर्य की शोध उसके पारिभाषिक स्वरूप तक ही सीमित नहीं हो सकती। उसकी यर्थाथ शोध के लिए सौंदर्य की मूल चेतना के अवयवों का अनुशीलन अनिवार्य होगा; और यह अनुशीलन निश्चय ही तथ्यपरक दृष्टि से संभव नहीं है।

ममता शर्मा नवोदित कवयित्री है। अभी तक इसकी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वह एक गृहिणी है व साहित्यिक समारोहों में गत दो तीन वर्षों से आती रही है। साहित्य में उसकी भूमिका अभी तक एक समर्पित दर्शक व श्रोता की रही है। वह कविता कहती है तो उसके भीतर भावों का समुद्र उफन पड़ता है। वह कविता इसलिए नहीं करती कि उसने कविता लिखी है बल्कि उसका दृढ़ आत्मविश्वास बोलता है कि उसकी कविता सुनने योग्य व विचार करने योग्य होती है। ममता शर्मा के प्रस्तुत संग्रह को जब मैंने पढ़ा तो सचमुच मैं कविता कहने की साहित्यिक काव्य क्षमता है। एक गृहिणी होने के नाते उसकी कविताओं में विषयों को उसने उठाया है। उसे गंभीरता से, ईमानदारी से व भावों की स्पष्ट गहराई से कविता में उतारा है। एक कविता 'उम्र से पहले' में वह कहती है कि फैशन, मोबाइल व फेसबुक की संस्कृति से हो रहे अनाप–शनाप व तेज परिवर्तन से हमारा परिवेश आशंकित व परेशान है। इन परिवर्तनों से नई पीढ़ी के संरक्षण के प्रति विश्वास दरक रहा है। यह सच भी है कि नई संस्कृति कहीं न कहीं भटकाव की स्थिति में आ रही है। उसकी चिंता स्पष्ट है।

ममता अपने जीवन की अनेक धाराओं से गुजरती हैं। उसकी ये धाराएं उसके काव्य–व्यक्तित्व के विस्तार की आरंभिक हलचल है। 'खामोशी का मंजर' कविता में उसने खामोशी को एक घना भयानक जंगल समझकर डर जाती है। यहां उसकी भाषा में दर्शनवाद की छाप है। शब्दों का प्रयोग कविता में प्रभाव उत्पन्न करता है। उसकी यह रचना भावों से भरी हुई है।

'प्रेम होता है बिल्कुल
मासूम बच्चे की तरह
निर्मल शीतल मीठे
जल की तरह
और होता है
समुद्र की गहराई लिए
लेकिन अब तो लगता है
बच्चे हो गए हैं बड़े
और उनकी मासूमियत
तो कहीं खो गई जैसे....!
हां शायद प्रेम को
बदल दिया गया है
अपनी अपनी जरूरतों के अनुसार
लेकिन क्या प्रेम
बदल जाता है।'[1]

उसका यह प्रश्न आधारहीन नहीं है। शायद इसीलिए 'तूफान के शांत होने तक' में वह कविता में किसी बेवफाई से विचलित है। मगर यह तो तूफान के शांत होने तक की क्रिया भर है। वह समझती है कि विश्वास तार–तार हुआ है। बेशक कविता किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंच पाई है मगर इसमें शब्दों और भावों का जोड़ सुंदर रूप में प्रस्तुत हुआ है। 'मन की कन्दराओं में' कवयित्री पाषाण होती संवेदनाओं और नरभक्षी कामनाओं के बीच कोमल भावनाओं और प्रेम की रश्मियों के निकलने की प्रतीक्षा कर रही है। वह नकारात्मक स्वरूप में से ही सकारात्मक भाव खोजने की कला जानती है। यह भाव देखेंः–

'मन की कन्दराओं को
बस इंतजार है
इनके छिद्रों में से
प्रेम की स्वर्णिम रश्मियां निकलने का' [2]

'संभव–असंभव' कविता में वह कहती है कि प्रेम की पराकाष्ठा ही तो ताजमहल बनवाने के लिए प्रेरित करती है। ताजमहल के प्रति ऐसे कितने ही भाव व्यक्त किए जाते रहे हैं। संभवतः वे सभी भाव अपनी जगह उचित है। वह कहती है कि जो हम स्वयं नहीं कर पा रहे वह हमें असंभव सा लगता है यहां रचना अपने पीछे अनेक प्रष्न छोड़ गई है। कभी–कभी प्रश्नों के उत्तर न खोज पाना भी तो कविता को प्रभावशाली बना देता है। 'सिर्फ शब्दों के सहारे' कविता में एक प्रेयसी प्रेम का अनंत सुख पाने को आतुर है। अपने स्वप्निल ख्यालों में वह उड़ती–फिरती, दौड़ती–भागती इंतजार में व्याकुल हो उठी है। प्रेम रस में डूबी एक प्रेयसी की अंतः–कथा को सुंदर भावों को प्रकट किया है। प्रेम की एक अन्य कविता 'प्रेम का रिश्ता' में वह प्रेम और विश्वास की व्याख्या करते हुए कहती है कि पति–पत्नी, दोनों का रिश्ता एक–दूसरे के समर्पण और आंतरिक विश्वास से ही प्रगाढ़ होता है। इसी प्रकार 'दस्तक' कविता में एक नव यौवना का इठलाना, केशों को बिखेरना ठीक वैसे ही लगता है जैसे सूरज के सामने किसी बादल का आ जाना। यहां प्रेयसी प्रेम–दर्शन में गहरे तक डूबी

हुई है। उसे लगता है कि धूप और प्रेम का प्रदर्शन संभवतः दो एक ही तरह की प्रेम क्रियाएं है। प्रेम दर्शन बोध की यह एक सुंदर रचना है।

'क्या रामराज्य आएगा
नकली रावण को फूंक असली ने खेल खेला है
जल, थल, अग्नि, आकाश, पवन में रावण की फैला है।।'[3]

एक कविता 'ओ स्त्री' में वह स्वप्रेम और परप्रेम का जिक्र करते हुए कहती है कि प्रेम की धारा के इन दो संयोजन को संसार जब भेद करके देखता है तो यह एक पीड़ा हो जाती है। अब स्त्री क्या कहे, क्या बताए। संभवतः प्रेम बोध की यह एक भिन्न व्याख्या हो सकती है। प्रेम की इसी धारा में आगे बढ़ते हुए 'चांद सितारों के बारे में' कविता में कहती है कि चांद सितारों के साथ प्रेम की तुलना या प्रेयसी की ख्वाहिश आज भी प्रश्न क्यों खड़े कर देती है। प्रेम चांद सितारों और हीरे मोतियों की इच्छा क्यों करता है। यहां उसके प्रश्नों के उत्तर कविता से नदारद है। [4]
'शाश्वत प्रेम' में एक प्रेयसी के रूप में उसका दृष्टिकोण कि प्रेयसी प्रेम की चाह करती है मगर शर्तों पर नहीं। वह राधा, मीरा और शबरी के प्रेम की तरह अपने प्रेम को युगों तक रहने वाला प्रेम कहती है। संभवतः विश्वास और समर्पण से किया गया यहीं अनंत प्रेम हो सकता है। लेकिन 'अन्तर' कविता में एक प्रेयसी विश्वासघात से पीड़ित है। वह यहां प्रेम और प्रेम में अंतर बताती है तो उसकी पीड़ा छलक उठती है।

'सितारों की साड़ी में
सजधज कर
तड़पता हुआ दिल
लेकर तू मेरा मन चली...
फूलों का गज़रा
जुल्फों में पिरोकर
सुलगते लबों से
लेकर तू मेरी राग सुरीली...
अरूण की बांहो में
जाने का ख्वाब सजाकर
जलते हुए मेरे अरमां
चुराकर तू मेरी आंखें सपनीली...
ऐ रात!
जरा ठहर'[5]

'पतंग का चक्रव्यूह भेदन' में नीलगगन में उन्मुक्त उड़ रही पतंग के भावों को एक योद्धा की भांति दर्शाया गया है। यहां उन्मुक्तता का भाव प्रेम के भाव से भी है। प्रेम के प्रति यह सुंदर प्रेम संकेत रचना है। 'यादों के जुगनू' कविता में वियोग में भी एक प्रेयसी का प्रेम के प्रति समर्पण उसकी स्मृति के भावों के साथ रखा गया है। 'बस वो सूरत ही तो नहीं' कविता में प्रेम को नये भावों में व्यक्त किया गया है। इसमें एक वियोगिनी के प्रेम की यादों को स्मृति में वर्णन किया गया है। संग्रह में प्रेम के अनेक भाव, अनेक भंगिमाएं, दर्शन, पीड़ाएं, स्मृतियां कोण व दृष्टि के भिन्न–भिन्न अर्थ बोध है। 'ए रात जरा ठहर' कविता में एक प्रेयसी के इंतजार की व्यथा है। रात बीतने के साथ प्रेयसी अपने प्रीतम के इंतजार मे पथरा गई है। रात को वह चांद की छोली में बैठ जाते देखकर उससे रूक जाने की गुहार करती है। प्रेम रस से भरी ऐसी कविताएं अब कहीं खो सी गई लगती है। कवयित्री ने प्रेम रस की ऐसी कविताएं बड़े साफ मन से और प्रेम के प्रति आदर के भाव के साथ लिखी है। इन कविताओं में अनावश्यक व अनपेक्षित भाव नहीं है। अतः ये कविताएं प्रेम रस, विरह–मिलन, श्रृंगार रस की कविताएं हो गई है। युवा व कविता का रसिक ऐसी रचनाओं को मन से पढ़ना चाहता है।
ममता शर्मा केवल प्रेमरस के भावों की ही कवयित्री नहीं है। उसने समाज के ज्वलंत पक्षों पर भी बखूबी और परिपक्वता के साथ, सुंदर ढंग से लिखा है। 'नशा' कविता साफ तौर पर नशे के प्रति युवाओं के बढ़ रहे आकर्षण को कम करने व खत्म करने के लिए यह आहवान कविता है। वह नशे से युवाओं को सचेत करते हुए कहती है कि नशे के इस खतरनाक नशे को जितना जल्दी छोड़ सकते हो छोड़ देना वरना तुम्हारी हर सांस, हर धड़कन एक सजा बनकर रह जाएगी। इसी तरह समाज में समस्त बूराइयों के प्रतीक रावण का पुतला जलाए जाने पर वह रावण का अंत नहीं मानती क्योंकि समाज में बुराइयों का रावण इस प्रकार जलाने से मरने वाला नहीं। [6]
इसके लिए कुछ बड़ा काम करना होगा। 'रावण का साम्राज्य' व 'कलियुग का रावण' दोनों इसी भाव की कविताएं है। 'कुछ तो अभी बाकी है' कविता में प्रेयसी अपने प्रेमी से विश्वासघात मिलने पर भी निराश नहीं है। कुछ कुछ वह विचलित है मगर हताश नहीं है। उसे इंतजार है कि अब भी कोई आएगा और जीवन की खुशियों से भर देगा। उसका अंतिम क्षण तक आश बांधे रहना जीवन को सकारात्मक दृष्टि प्रदान करता है। इसीलिए कविता सभी को प्रभावित करती है। 'जिन्दगी का दस्तूर' कविता में वियोग व मिलन को वह जीवन का विधान मानती है। इसलिए वियोग उसे विचलित नहीं करता बल्कि प्रतीक्षा में उसकी आशाएं और अधिक सुदृढ़ नजर आती है। इसमें कवयित्री का सकारात्मक भाव पाठकों को प्रभावित करता है।
'पिता' कविता संदेश प्रधान संस्कारों से युक्त कविता है जिसमें वह एक आदर्श पिता के भावों से प्रेरित है। कदम–कदम पर वह पिता के अहसानों के प्रति कृतज्ञ है। सचमुच ही यह एक दुर्लभ भाव की सुंदर कविता है। 'धूप और छांव सा जीवन' कविता भी एक आदर्श विशेष भाव की कविता है। वह कहती है कि हमें नकारात्मक भाव नहीं रखना चाहिए क्योंकि सुख और दुख तो धूप और छाया के समान है और आते–जाते रहते हैं।
उसकी, आशाओं से भरी एक और कविता है– 'कमल के फूल'। वह मानती है कि वर्तमान मनुष्य जीवन में सब रिश्ते नागफनी के समान हो गए हैं मगर वह किसी बदरा के बरस आने की प्रतीक्षा में है, ताकि रिश्तों के महक भरे फूल फिर से खिल उठें। जीवन में इस प्रकार अपने सकारात्मक दृष्टिकोण से वह आशाओं की कोई राह खोज ही लेती है।

'सौंधी महक
वसुंधरा की
अब नहीं आती
और लुप्त हो गई
टर्र–टर्र–टर्र
मेंढकों की सांझ ढले
क्योंकि
गांव
अब नहीं रहे गांव
आने लगी है
महानगर की
एक तीखी बू...।।'[7]

इसी प्रकार 'इमारतें' और 'इंसान' कविता में इमारत के जंगलों से और आबादी की तेज रफतार वृद्धि से वह बूरी तरह चिंताग्रस्त और भयभीत है। इसमें उसे सच्चाई का बोधभरा अहसास है। इसलिए कविता सुंदर बन पड़ी है। 'मेहनतकश इंसान' भी इसी भाव की कविता है जिसमें उसकी संवेदना साफ झलकती है। वह किसान के मेहनती और कष्टमयी जीवन में बार–बार झांककर

अनुभव करती है कि हमारा किसान खुशहाल नहीं है। वह इससे चिंतित और त्रस्त है। कविता में अतिशयोक्ति के भावों से किसान के बदहाल जीवन को छूने का एक सच्चा प्रयास किया गया है। उसने एक अछूते विषय को गहनता से भॉपने का प्रयास किया है। नेताओं की कपटी चालों को भी इसमें रेखांकित किया गया है।

जब तक पाखण्डियों के चरणों को धोकर खीर बनाई जाएगी

हिंदू–मुस्लिम–सिख–ईसाई में मजहबी दीवार बनाई जाएगी
जब तक फुटपाथों पर ठिठूरता जीवन क्षुधा अगन से झुलसेगा
गुलामी की जंजीरों से जकड़ा जीवन अनपढ़ता से तड़पेगा
जब तक हिंदी हिंद की पटरानी नहीं बन पाएगी
युवा पीढ़ी साइबर भूलभुलैया में भटकती जाएगी
तब तक गणतंत्र की जड़ें
उखड़ती जाएंगी....
जड़ें उखड़ती जाएंगी...[8]

मगर प्रभावशाली रचना है। वह नारी की आंखों बह आए आंसू रूपी नीर से सहमी–सहमी सी है कि कहीं ये आंसू तांडव न मचा दें। कविता कहते–कहते ममता शर्मा कविता के बारे में बताती है कि कविता क्या है। मैं समझता हूं कविता के उतने ही भावार्थ है जितने ढूंढ लिए जाए। कविता के लिए ये अलंकरण निःसंदेह एक प्रेयसी के प्रेम भावों की विस्तार से व्याख्या है, परिभाषा है। कविता एक विशेष आकर्षण पैदा करती है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि ममता शर्मा की कविताएं साफ–सुथरी भाव, प्रेम, समाज, व्यक्ति व इसके विभिन्न रिश्तों की कविताएं हैं। इसी दृष्टि से वह एक युवा विधवा के बारे में कहती है (कविता–अंतर की पुकार में) कि किसी विधवा जीवन की पीड़ा की कल्पना करके उसे शब्दों में बयान करना बड़ा दुखद दृश्य उत्पन्न करता है। लेकिन तब 'कौन हो तुम' कविता में स्वयं से मिलती है तो मंत्रमुग्ध हो जाती है। स्वयं का साक्षात्कार करवाती इस कविता में संक्षिप्तता के बावजूद भावपरक गहराई है। औरत से उसके किसी अपने द्वारा बेरूख हो जाने पर वह करूणा के भाव से उसकी व्यथा जानने का प्रयास करती है। 'दीवारों के कान' नामक कविता संवेदना की पूरी तस्वीर खींच देती है। उसकी यह सकारात्मक दृष्टि बहुत व्यापक व अर्थ पूर्ण है। [9] वह सभी को प्रसन्न व खुशहाल देखना चाहती है। वह किसी भी कमजोर व साधनहीन को देखकर भाव विभोर हो उठती है। अपनी झोली से वह उसकी झोली भर देना चाहती है। उसके भीतर मानवीय सेवा व सहयोग के भाव भरे हुए है। इसीलिए वह 'प्रेम मोहताज नहीं' कविता में कहती है कि प्रेम तो दो दिलों का बंधन होता है। यह किसी भी रिश्तें का मोहताज नहीं है। इन भावों में कविता की श्रेष्ठता साफ झलकती है।

सन्दर्भ सूचि

1. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 11
2. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 16
3. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ059
4. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 11
5. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ077
6. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 12
7. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 55
8. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 8
9. ममता शर्मा, मन की कन्दराओं में, पृ0 10